अध्ययन 4

परमेश्वर के वचन को पढ़ना

प्रौढ़ होने की आवश्यकता

अब आप मसीही बन गये हैं । आप एक नई सृष्टि हैं आप नें नया जन्म पा लिया है । (देखें 2 कुरिन्थियों 5:17) आत्मिक रुप से आप नये जन्मे हुए बालक के समान है जिसे प्रौढ़ता की ओर बढ़ते जाना है । परमेश्वर का वचन हमें बताता है ।

"नये जन्मे हुए बच्चों की नाई निर्मल आत्मिक दुध की लालसा करो ताकि उसके द्वारा उद्धार पाने के लिये बढ़ते जाओं।"
(1 पतरस 2:2)

यहां दूध का वर्णन किया गया है जो परमेश्वर का वचन की आवश्यकता है, इस पर घ्यान करना है तथा इसके अनुसार चलना है । यह मसीही लोगों की बढ़ोतरी तथा प्रौढ़ता का मौलिक बात है । इसके बिना हम आत्मिक बालक ही बने रहेंगे तथा कभी नहीं बढ़ेंगे ।

क्या करना चाहिए ?

यह अत्यन्त आवश्यकता है कि आप कम से कम नया नियम प्राप्त करें। बाइबल का सहज एवं नया अनुवाद उपलब्ध है आप उसे पढ़ें । मसीही होने के कारण हमें परमेश्वर का वचन पढ़ने के लिये समय अलग करना होगा प्रति दिन । वस्तुत एक भी दिन बाइबल पढ़े बिना न बितने पाए । आरम्भ करने का अच्छा जगह बाइबल के नया नियम में यूहन्ना रचित सुसमाचार। कम से कम एक दिन में एक अघ्याय पढ़ें । अघ्ययन आरम्भ करने से पहले

प्रार्थना करें कि परमेश्वर अपने बारे में और अधिक आप दिखाए तथा आप को उसके लिये क्या करना है । जब आप पढ़ते हैं, अपने स्वयं से पूछे, "परमेश्वर मुझ से क्या कह रहा है ?" तथा जो कुछ वह कहता है उसे मानने के लिये स्मख रखें । यूहन्ना रचित सुसमाचार पढ़ने के बाद या तो आप फिर पढ़े अथवा नया नियम के शेष पुस्तकों को पढ़ें, पुराना नियम पढ़नें से पहले ।

सुझाव :—

- जो पद आप के जीवन से अधिक सम्बन्धित हो जो परमेश्वर के द्वारा प्रगट होता है, आप ऐसा पद को रेखांकित करें । भविष्य में जब आप खोजेंगे तो वह सहज से मिल जाएगा ।
- लेखन पुस्तिका और कलम पास में रखें और उन बातों को लिख लें जो कुछ आप अनुभव करते है कि परमेश्वर आप से कहता है या कोई वचन जो परमेश्वर के साथ सहभगिता रखने में सहायक सिद्ध हो ।
- जो पद आप के लिए अधिक अर्थ पूर्ण है उन्हें कंठस्थ कर लें विशेषकर परमेश्वर को प्रतिज्ञाएं हम विश्वासियों के लिये ।
- पदों को समझने में के जो अधिक कठिन है आप संघर्ष न करें । परमेश्वर उसका अर्थ अन्त में दिखाएगा उन के विषय आप स्थानीय कलीसिया से भी पूछ सकते हैं एवं सहायता पा सकते हैं ।
- सम्भवतः आप की स्थानीय कलीसिया के पास गृह प्रार्थना एवं बाइबल अध्ययन झुण्ड होंगे या सप्ताहिक बाइबल अध्ययन । यदि आप उनके साथ संगति करेंगे, यह आप के लिये परमेश्वर के वचन का ज्ञान प्राप्त करने में सहायता करेगा ।
- प्रतिदिन बाइबल अध्ययन सहायता उपलब्ध है आप को बाइबल पढ़ने एवं समझने के लिये ।

मार्गदर्शन प्राप्त करना

मसीही जीवन एक यात्रा के समान है और परमेश्वर का इस प्रकार वर्ण किया गया है –

"तेरा वचन मेरे पाव के लिये दीपक और मेरे मार्ग के लिये उजियसला है ।"
(भजन 119:105)

परमेश्वर हम से बातचीत करेंगे तथा हमारा मार्गदर्शन करेंगे यदि हम उसके वचन (बाइबल) को पढ़ते एवं उस पर घ्यान लगाते हैं । बाइबल हमारे सृष्टि कर्त्ता की हस्त पुस्तिका है । यह हमें शिक्षा देती है तथा परमेश्वर को समझने में मदद करती है जिस ने हमें बनाया और व्यक्तिगत रीति से वास्तव में हम कौन है । बाइबल हमें यह भी बताती है कि जीवन के हर क्षेत्र में परमेश्वर को कैसे प्रसन्न करें एवं उत्तम रीति से कैसे उसकी सेवा करें । इसलिये हमें समय निकाल कर इसको पढ़ना चाहिए तथा मनन करना चाहिए ।

"तेरी बातों के खुलने से प्रकाश होता है, उस से भोले लोग समझ प्राप्त करते हैं ।" (भजन 119:130)

परमेश्वर का वचन क्या कर सकता है ?

परमेश्वर का वचन समस्याओं तथा व्याकुलताओं पर विजय पाने में हमारी सहायता करता है । यह दिखलाता है हरेक बात की वास्तविक स्थिति को क्योंकि यह परमेस्वर की सच्चाई है जो हम पर प्रगट किया गया है । आप पवित्र शास्त्र पर भरोसा रख सकते हैं ।

"हर एक पवित्र शास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है और उपदेश, और समझाने,और सुधारने और धर्म की शिक्षा के लिये लाभदायक है। ताकि परमेश्वर का जन सिद्ध बने, और हर एक भले काम के लिये तत्पर हो जाए ।" (2 तीमुथियुस 3:16–17)

परमेश्वर का वचन हमें भोजन प्रदान करता है जो अनन्त काल के लिये

परमेश्वर के साथ रहने के लिये हमें तैयार करता है। यह हमारा मानदण्ड है जीवन के उन वस्तुओं को मापने के लिये जो परमेश्वर के निकट पहुंचने में बाधक है साथ में यह भी जानने के लिये कि परमेश्वर की ओर से कि नहीं अथवा परमेश्वर के लिये है या नहीं ।

क्या हम नया नियम पर भरोसा कर सकते है ?

निम्नलिखित तालिका सुसमाचार के प्रामाणिकता एवं विश्वसनीयता दर्शाता है जो धर्मनिरपेक्ष साहित्य के साथ।

प्राचीन लेख	थियोयडाइडस का इतिहास	कैसरके गालीक युद्ध	तासीतस की इतिहास	चार सुसमाचार
A. मूल प्रलेख लेखक	460–400ई0पू0	58–50ई0पू0	ई0सन100	65–90ई0सन
B. प्राचीनतम अवषैश प्रति	900 ई0सन (+कुछ पहलो सही के अपूर्ण भाग)	850 ई0सन्	800 ई0सन्	350 ई0सन् (अपूर्ण भाग से भी पहले)
C. A तथा B के बीच लगभग का समय	1300 वर्ष (400 वर्ष का अंश)	900 वर्ष	700 वर्ष	300 वर्ष (50 वर्ष का अंश)
D. अनेक वर्तमान प्रतिया आज उपलब्ध	8	10	4	2000 तक

इस बात को भी स्मरण रखना चाहिए कि 250–500 प्रत्यक्ष साक्षियाँ यीशु के पुनर्रुत्थान के समय जीवित थे जब पौलुस और दूसरे नया नियम के लेखकों ने अपने हस्तलिपियाँ लिखे । यदि आरम्भिक कलिसिाया की हस्तालिपियाँ झूठे थे तो उनके प्राभाणिकता की चुनौती देनेवाले का निसन्देह प्रमाण मिलता परन्तु यह बात नहीं है । धर्म निरपेक्ष लेखों ने अपने समय में यीशु के विषय वर्णन किया है तथा चारों सुसमाचार का विरोध नहीं किया । न ही पुरातत्व सम्बनधी अविष्कार ने बाइबल की सच्चाई पर किसी प्रकार का सन्देह प्रगट किया है। ये सारी बातें नया नियम की विश्वसनीयता की ओर इशारा करते हैं। लेखकों ने अपने हस्तलिपियाँ लिखे । यदि आरम्भिक कलिसिाया की हस्तालिपियाँ झूठे थे तो उनके प्राभाणिकता की चुनौती देनेवाले का निसन्देह प्रमाण मिलता परन्तु यह बात नहीं है । धर्म निरपेक्ष लेखों ने अपने समय में यीशु के विषय वर्णन किया है तथा चारों सुसमाचार का विरोध नहीं किया । न ही पुरातत्व सम्बनधी अविष्कार ने बाइबल की सच्चाई पर किसी प्रकार का सन्देह प्रगट किया है। ये सारी बातें नया नियम की विश्वसनीयता की ओर इशारा करते हैं।

प्रश्न एंव संकेत :–

1. पवित्र शास्त्र 2 तीमुथियुस 3:16–17 में कौन सी चार बातें बताता है कि वे लाभ दायक है तथा इस में परमेश्वर का क्या उद्देश्य है ?
2. पढ़े यहोशु 1:7,8 और तब निम्नलिखित का उत्तर दें:
   - क– क्या हमें परमेश्वर का वचन कभी–कभी पढ़ना चाहिए जब कभी हमें समय मिलता है ?
   - ख– क्या हमें परमेश्वर का वचन पढ़ने के लिये चिन्ता करना चाहिए या इसके विपरित उन बातों पर भरोसा करें जिसे हम उचित समझते हैं ?
   - ग– क्या परमेश्वर का वचन वास्तव में हमारे प्रतिदिन के जीवन से सम्बन्धित है अर्थात व्यवहारिक तौर से जीवित रहने के लिये हमारी सहायता करता है ?

घ– परमेश्वर के वचन पर ध्यान दिए रहने से क्या प्रत्यक्ष परिणाम हो सकता है ?

3. पवित्रशास्त्र आप के लिये क्या कर सकता है ? (2तीमु0 3:15)
4. कौन सी बात बाइबल के दुसरे पुस्तकों से भिन्न प्रगट करती है? (1 थिस्सलुनीकियों 2:13)
5. क्या होगा जब हम यीशु की शिक्षा को थामें रहते है जो बाइबल में प्रकाशित किया गया है ? (यूहन्ना 8:31–32)
6. हम परमेश्वर के वचन (मसीह के वचन) को क्या करने की अनुमति दे? (कुलुस्सियों 3:16, रोमियों 15:4)
7. यीशु ने कहा, 'मनुष्य केवल रोटी ही से नहीं जी सकता' सो किस प्रकार दुसरे भोजन को प्राप्त करें ताकि जीवित रहें ? (मत्ती 4:4)
8. परमेश्वर का वचन किस के समान बताया गया है ? (इब्रानियों 4:12)
9. प्रभु हम से क्या कराना चाहता है तथा क्या परिणाम होंगे ? (भजन 1:1–4)

प्रार्थना :

सर्व शक्तिमान परमेश्वर मैं तुझे धन्यवाद देता हूँ कि तूने हमें बाइबल दिया है जो परमेश्वर का वचन है तथा हम पर प्रकाशित किया गया है। मैं अनुभव करता हुँ कि मैं तेरे विषय तथा तेरी योजना के विषय बहुत कम जानता हूँ परन्तु मैं और अधिक जानना चाहता हूँ । मेरी सहायता करें कि मैं प्रतिदिन समय निकाल कर तेरे वचन (बाइबल) पढ़े तथा जब मैं पढ़ता हूँ । मेरी सहायता करें कि तेरे विषय अधिक सींख सकुँ तथा जान सकुँ कि तू मुझ से क्या चाहता है। मैं यीशु के नाम में प्रार्थना करता हूँ । आमीन।